

Cyclical Theory of Social Change (चक्रीय सिद्धान्त)

परिभाषा

चक्रीय सिद्धान्त के अनुसार समाज और सभ्यताएँ जीवों की तरह **जन्म, विकास, उत्थान और पतन** के चक्र से गुजरती हैं। परिवर्तन रैखिक (सीधी रेखा में) नहीं बल्कि **पुनरावृत्तिमूलक (Repetitive)** होता है।

प्रमुख विचारक

- **ओसवाल्ड स्पेंगलर** – सभ्यताएँ जन्म लेती हैं, विकसित होती हैं और फिर नष्ट हो जाती हैं (*Decline of the West*)।
 - **आर्नोल्ड टॉयनबी** – सभ्यताएँ “*चुनौती और प्रतिक्रिया*” (Challenge & Response) के आधार पर टिकती हैं; असफल होने पर पतन।
 - **विलफ्रेडो पारेतो** – सत्ता का चक्र “*अभिजात वर्ग का परिसंचरण*” (Circulation of Elites); शासक वर्ग बदलता रहता है।
 - **पितिरिम सोरोकिन** – संस्कृति तीन चक्रों में बदलती है:
 1. **Ideational** (आध्यात्मिक),
 2. **Idealistic** (मिश्रित),
 3. **Sensate** (भौतिकवादी)।
-

विशेषताएँ

1. समाज जन्म-विकास-पतन के चक्र से गुजरता है।
 2. इतिहास खुद को किसी न किसी रूप में दोहराता है।
 3. कोई भी सभ्यता स्थायी नहीं।
 4. परिवर्तन उत्थान और पतन दोनों को शामिल करता है।
-

आलोचना

- अत्यधिक निराशावादी – हर सभ्यता के पतन को अनिवार्य मानता है।
 - वैज्ञानिक आधार कमजोर, अधिकतर ऐतिहासिक उदाहरणों पर आधारित।
 - समाज की प्रगति और विविधता की अनदेखी।
-

निष्कर्ष

चक्रीय सिद्धान्त यह बताता है कि सामाजिक परिवर्तन हमेशा आगे की ओर नहीं होता। समाज कभी आगे बढ़ता है, कभी पीछे जाता है। यह दृष्टिकोण इतिहास और समाज को उत्थान-पतन की चक्रीय प्रक्रिया के रूप में समझाता है।